बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक – 13 - 01- 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -18 अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी की कविता एक बूँद के बारे में अध्ययन करेंगे ।

एक बूंद – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी

सोचने फिर फिर यही मन में लगी
आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी।
दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा

मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी
चू पड़ूंगी या कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी
एक सुंदर सीप का मुंह था खुला

वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते सोचते

जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किंतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें

बूंद लौं कुछ ओर ही देता है कर।

~ अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'